नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पेपर लीक कानून ; भरोसे की बहाली का अवसर

लोकसभा में पारित लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026 केवल एक कानूनी संशोधन नहीं है, बल्कि देश की परीक्षा व्यवस्था में लगातार बढ़ते अविश्वास को दूर करने की एक गंभीर कोशिश भी है. पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न प्रतियोगी और प्रवेश परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाओं ने लाखों युवाओं के सपनों को झटका दिया है. वर्षों की मेहनत कुछ मिनटों की आपराधिक साजिश की भेंट चढ़ जाती थी. ऐसे में सरकार द्वारा कानून को और अधिक कठोर बनाना समय की मांग भी थी और व्यवस्था की आवश्यकता भी.

संशोधन के तहत व्यक्तिगत अपराधियों के लिए सजा को बढ़ाकर 5 से 10 वर्ष तक की जेल तथा 50 लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान किया गया है. वहीं संगठित पेपर लीक गिरोहों के लिए न्यूनतम 7 वर्ष की सजा और 10 करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रावधान स्पष्ट संदेश देता है कि अब इस अपराध को सामान्य आर्थिक अपराध नहीं माना जाएगा. परीक्षा आयोजित करने वाली निजी एजेंसियों और उनके वरिष्ठ अधिकारियों को भी सीधे जवाबदेह बनाया गया है. यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि कई मामलों में केवल बिचौलियों पर कार्रवाई होती थी, जबकि संस्थागत जिम्मेदारी तय नहीं हो पाती थी.

इस संशोधन का सबसे प्रभावी पक्ष समयबद्ध जांच और न्यायिक प्रक्रिया है. दो महीने में जांच पूरी करने, विशेष फास्ट-ट्रैक अदालतों के गठन और तीन महीने के भीतर फैसले की व्यवस्था से यह उम्मीद जगी है कि वर्षों तक लंबित रहने वाले मामलों का शीघ्र निपटारा होगा. न्याय तभी प्रभावी माना जाता है जब वह समय पर मिले. यदि दोषियों को जल्दी सजा मिलेगी तो इसका निवारक प्रभाव भी अधिक होगा. उच्च न्यायालय में अपील के निपटारे के लिए भी समय-सीमा तय करना इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है.

हालांकि केवल कानून कठोर कर देने से समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं होगी. पेपर लीक का नेटवर्क तकनीकी कमजोरियों, भ्रष्टाचार, आंतरिक मिलीभगत और सुरक्षा प्रबंधन की खामियों का लाभ उठाता है. इसलिए परीक्षा प्रणाली में डिजिटल सुरक्षा, एन्क्रिप्टेड प्रश्नपत्र वितरण, परीक्षा केंद्रों की निगरानी, कर्मचारियों का सत्यापन और आधुनिक साइबर सुरक्षा तंत्र को भी समान प्राथमिकता देनी होगी. राज्यों और केंद्र के बीच बेहतर समन्वय तथा खुफिया एजेंसियों की सक्रिय भूमिका भी आवश्यक होगी. यह भी ध्यान रखना होगा कि जांच की गति बढ़ाने के नाम पर किसी निर्दोष व्यक्ति के अधिकारों की अनदेखी न हो. कानून का उद्देश्य कठोर दंड के साथ निष्पक्ष जांच और पारदर्शी न्याय सुनिश्चित करना होना चाहिए. दोषियों के विरुद्ध सख्ती और निर्दोषों के प्रति संवेदनशीलता, दोनों लोकतांत्रिक व्यवस्था की अनिवार्य शर्तें हैं.

देश में करोड़ों युवा प्रतियोगी परीक्षाओं को अपने भविष्य का सबसे बड़ा माध्यम मानते हैं. उनकी मेहनत, ईमानदारी और विश्वास की रक्षा करना सरकार और संस्थाओं की सर्वोच्च जिम्मेदारी है. यह संशोधन विधेयक उसी विश्वास को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है. अब वास्तविक चुनौती इसके प्रभावी और निष्पक्ष क्रियान्वयन की है. यदि कानून का पालन पूरी दृढ़ता से हुआ, तो न केवल पेपर लीक माफिया पर अंकुश लगेगा, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता भी मजबूत होगी. अंततः यही किसी भी लोकतांत्रिक और योग्यता-आधारित व्यवस्था की सबसे बड़ी सफलता होगी.

महाकौशल की डायरी

अपने ही मंत्री से नाराज हो गये विधायक ...

अविनाश दीक्षित

अपने बेबाक बयानों के लिए पहचाने जाने वाले प्रदेश के पूर्व मंत्री व जबलपुर के पाटन से विधायक अजय विश्रोई ने अपनी ही पार्टी के लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह पर निशाना साधा तो चर्चाओं का बाजार सरगर्म हो गया. सोशल मीडिया में पोस्ट करते हुए विधायक ने लिखा है कि लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह द्वारा जबलपुर- पाटन सड़क के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण को शासन से स्वीकृति नहीं दिलवाई गई है क्योंकि ये उनकी प्राथमिकता में नहीं है. चर्चा है कि लोक निर्माण मंत्री से कोई संतुष्टीपूर्ण जवाब नहीं मिला तो विधायक ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का दरवाजा खटखटाया और उनसे मुलाकात कर एक पत्र सौंपा जिसमें मांग की गई कि जबलपुर-पाटन एवं पाटन-मनकेड़ी सड़क के निर्माण कार्य, चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण का कार्य जल्द कराया जाए.

विधायक के अनुसार जबलपुर-पाटन सड़क के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण की योजना को प्रदेश सरकार के बजट में शामिल किया जा चुका है, फिर भी यह सड़क लोक निर्माण मंत्री की प्राथमिकता में नहीं है, ये अपने आप में एक बड़ा सवाल है. बतकही है कि लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह की कार्यशैली की शिकायत

विधायक ने सीएम से की है. हालांकि अभी तक लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह द्वारा इस पूरे मामले में कोई बयान जारी नहीं किया गया है. दूसरी तरफ नगर कांग्रेस के खेमे में लोक निर्माण मंत्री को लेकर भी चर्चाएं तेज हुईं जिसने राजनैतिक गलियारों में मंत्री को अभी भी सुर्खियों में बनाए रखा है. सोशल मीडिया में अजय विश्रोई और राकेश सिंह के आपसी टकराव की तस्वीरें वायरल हुईं तो सवाल खड़े जरूर हुए कि अपनी पार्टी के ही विधायक की मांग पर मंत्री द्वारा एक्शन क्यों नहीं लिया जा रहा था, आखिर वजह क्या थी, क्या आपसी मनमुटाव या फिर कुछ और.. बहरहाल कारण कुछ भी हो लेकिन जिस तरह से लोक निर्माण मंत्री के खिलाफ विधायक ने आवाज उठाई उससे तो ध्वनित हो ही गया कि भाजपा में अंदरूनी समन्वय किस दशा में है. ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, समय समय पर पार्टी की अंतर्कलह सामने आती रही है. यह बात अलहदा है कि भाजपा के कर्णधार इस तरह के विषयों को बड़े परिवार की छुटपुट खटपट बताते रहे हैं.

विधायक के तेवर और प्राधिकरण ...

पिछले दिनों जबलपुर के शताब्दीपुरम एमआर-4 रोड के पास वर्षों से जमीं अवैध झुग्गी झोपड़ियाँ और दुकानों के कब्जे, अवैध कब्जों को हटाने से जुड़ी सुर्खियां बटोर गई. दरअसल हाईकोर्ट के निर्देश पर जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, जबलपुर विकास प्राधिकरण ने संयुक्त रूप से कार्यवाई करते हुए अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई शुरू की थी. मामले में उत्तर मध्य विधायक चाहते तो जबलपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष संदीप जैन से सामान्य चर्चा कर बारिश में हो रही अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई को रोक सकते थे लेकिन श्रेय लेने के चक्कर में महोदय ने सार्वजनिक रूप से अपनी ही पार्टी के सदस्य पर अपरोक्ष निशाना साधा और जबलपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को जमकर फटकार लगाते हुए कह दिया कि नौटंकी चल रही है क्या ये जेडीए की....विधायक के तेवर के मद्देनजर अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई रुक गई. इस वाक्ये के बाद सोशल मीडिया में चर्चाएं सरगर्म हुईं कि गरीबों से दिली लगाव के चलते विधायक अभिलाष पांडे के हस्तक्षेप के बाद ही गरीबों को राहत मिली है लेकिन कुछ समय बाद हकीकत कुछ और ही निकली. खबर सामने आई कि हाईकोर्ट से अगली सुनवाई तक अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई रोकने के आदेश जारी किए गए हैं .इसके बाद सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं का स्वरूप बदल गया, कमेंट सामने आने लगे कि विधायक महोदय कम से कम यहां तो श्रेय लेने की राजनीति न करें. यद्यपि विधायक समर्थक पोस्टर बाजी कर अपने बॉस को गरीबों का मसीहा बताने की कोशिश में लगे रहे. उधर भगवादल के ही कुछ कार्यकर्ता विधायक अभिलाष पांडे के उपरोक्त किरदार को राजनैतिक स्टंट निरूपित करते सुने गये. सियासी चश्मेधारियों को लगा कि इस विषय को लेकर जेडीए अध्यक्ष और विधायक आमने सामने होंगे, एक तरफ विधायक का सख्त रूख और दूसरी तरफ जेडीए अध्यक्ष की सादगी भरा जवाब कि जो भी कार्रवाई हो रही है वह हाईकोर्ट के निर्देश पर हो रही है, से सभी के मंसूबे धरे के धरे रह गये. फिलहाल कार्रवाई पर विराम लग चुका है, परन्तु इस बात से साफ हो गया है की भाजपा की अंदरूनी राजनीतिक किस करवट जा रही है. चर्चाएं तो ये भी हुईं कि विधायक अभिलाष पांडे चाहते थे कि जेडीए अध्यक्ष की कमान उनके चहेते को दी जाए लेकिन संगठन द्वारा ये कुर्सी दूसरे को दे दी गई जिसके बाद विधायक को जेडीए के प्रति भड़ास निकालने का मौका मिला और फिर जो हुआ वो सभी के सामने ही गया.

नये भारत का नया अंदाज लिये आंदोलन का समापन

राजीव खंडेलवाल
(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास)

> भाजपा को इस आंदोलन को दो अंतराल के दो रूप को देखकर उसके अंतर को समझना होगा. प्रारंभिक चरण में 20 जुलाई के लाठी चार्ज से पहले तक आंदोलन देशव्यापी होने के बावजूद विशुद्ध रूप से विपक्षी दलों का रहा, जिसमें सामान्य निष्पक्ष नागरिकों की भागीदारी अल्प थी. लेकिन लाठी-चार्ज धक्का मुक्की, लडकियों के साथ दुर्व्यवहार के वीडियो वायरल होने पर भाजपा का बड़ा समर्थक वर्ग, जो अभी तक कॉकरोच आंदोलन में शामिल नहीं था और जो श्री राम मंदिर चढ़ावा कांड से भी बहुत नाखुश नहीं हुआ था, वह भी विचलित होकर आंदोलन में शामिल हो गया. इसका एक संकेत जोमैटो स्विगी कम्पनी द्वारा देश भर से जंतर-मंतर तक इतनी मात्रा में खाना पहुंचाया गया कि आंदोलनकर्ताओं को मना करना पड़ा. आंदोलनों के इतिहास में यह पहली बार हुआ. सामान्यत: ऐसी व्यवस्था स्थानीय स्तर पर ही होती रही हैं.

जंतर-मंतर पर घोषित उद्देश्यों की प्राप्ति तक चलने वाला अनिश्चितकालीन आंदोलन अंतत: 36 दिनों बाद समाप्त हो गया. आंदोलन के प्रवक्ताओं ने केंद्रीय मंत्रियों जे.पी. नड्डा और डॉ. जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में संयुक्त प्रेस वार्ता कर आंदोलन समाप्ति की घोषणा की. देश ने राहत की सांस ली.

छत्रपति संभाजी नगर (महाराष्ट्र) के एक युवा अभिजीत दिपके द्वारा सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर शुरू किया गया यह अभियान आरंभ से लेकर समापन तक अनेक अप्रत्याशित घटनाओं, विचित्रताओं, आशंकाओं, नेतृत्व परिवर्तन, जनसमर्थन और राजनीतिक बहसों का केंद्र बना रहा. इस आंदोलन ने न केवल अनेक स्थापित धारणाओं को चुनौती दी, बल्कि लोकतांत्रिक आंदोलनों की भाषा, परिभाषा व वेशभूषाएं बदलने की दिशा में अग्रसर हुआ. उच्चतम न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश न्यायाधिपति सूर्यकांत के द्वारा 15 मई को एक फर्जी लॉ डिग्री और सीनियर एडवोकेट पदनाम से जुड़ी सुनवाई के दौरान युवाओं पर की गई मौखिक टिप्पणी बेरोजगार कॉकरोच की तरह होते हैं, जिन्हें नौकरी नहीं मिलती है, वे मीडिया, सोशल मीडिया व आरटीआई एक्टिविस्ट बनकर सिस्टम पर हमला खड़ा करते हैं ने बवंडर खड़ा कर दिया. फलस्वरुप अगले दिन 16 तारीख को एक युवा दलित अभिजीत दिपके ने व्यंग्यात्मक ऑनलाइन मूवमैंट शुरू करने के लिए विशुद्ध गैर राजनीतिक कॉकरोच जनता पार्टी (ब्श्च) के गठन की घोषणा की. विश्व इतिहास में सोशल मीडिया इंस्टाग्राम पर बनी सीजेपी पहली पार्टी.

जस्टिस सूर्यकांत द्वारा उक्त टिप्पणी से उत्पन्न बवाल होने के बाद दिए गए स्पष्टीकरण के बावजूद कॉकरोच कहने पर प्रतिक्रिया स्वरूप एक भारतीय नागरिक अभिजीत दिपके द्वारा अमेरिका के बोस्टन शहर से 16 मई को इंस्टाग्राम पर किए गए आवाहन की अनुक्रिया (रिस्पांस) में ऐतिहासिक 2 करोड़ 80 लाख लोगों का समर्थन, शायद विश्व में पहली बार इंस्टाग्राम पर हुआ. 3 जून को भारत वापस लौटकर पेपर लीक मामले को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर जंतर मंतर पर 6 जून को प्रदर्शन करने की घोषणा की.

20 जून से जनता मंतर पर आंदोलन प्रारंभ होने के बाद अचानक 28 जून को लद्धाख के प्रसिद्ध पर्यावरणविद, शिक्षा सुधारक, सामाजिक कार्यकर्ता व अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त सोनम वांगचुक के स्व:प्रेरणा से धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे तक अनशन पर बैठने से आंदोलन को गति मिली और वांगचुक इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता हो जाते हैं. प्रारंभ में आंदोलन मात्र तीन चार हजार लोगों तक ही सीमित रहा.

सोनम वांगचुक की तबीयत बिगड़ने पर 16 जुलाई को एक याचिका दिल्ली उच्च न्यायालय में दायर की आती है, जिसमें चिकित्सा हस्तक्षेप की मांग की गई. तथापि इसे शंका की निगाहों से देखा जाता है.

वांगचुक की तबियत बिगड़ने से 18 जुलाई को अचानक सुबह 6.00 बजे पुलिस द्वारा उन्हें सफेद चादर में लपेटकर सफदरजंग अस्पताल में भर्ती किया गया. इससे आंदोलन को और तीव्र गति मिलती है. 21 जुलाई को सोनम की पत्नी गीतांजलि की याचिका पर न्यायालय के आदेश से वांगचुक को निजी अस्पताल मेदांता में स्थानांतरित किया गया.

19 जुलाई को 20 तारीख को प्रारंभ होने वाले संसद के घेराव का ऐलान. विपक्षी दलों के नेतागण, फिल्म हस्तियां व अन्य सेलीब्रेटीज धरना स्तर पर आकर सोनम वांगचुक से मिलते हैं. अरविंद केजरीवाल, मनोज झा, कीर्ति आजाद, प्रशांत भूषण, स्वरा भास्कर, कुणाल कामरा, प्रकाश राज आदि. दिल्ली में पहली बार किसी आंदोलन पर पैलेट गन का इस्तमाल रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) ने किया. साथ ही सादे कपड़े में पुलिस वाले लाठियां भूंज रहे थे.

अचानक 21 जुलाई को राहुल गांधी की नेतृत्व में कांग्रेस सहित विपक्ष के सांसद गण प्रधानमंत्री आवास के सामने पहुंचकर धरने पर बैठ जाते हैं और इस प्रकार चल रहा आंदोलन का नेतृत्व छणिक राहुल गांधी के हाथों में आ जाता है. तत्पश्चात आंदोलन, युवा शक्ति व नागरिकों के हाथों में आ जाता है.

एक ही बारिश ने खोली सड़कों की पोल

जब एक दिन की बारिश सड़कों को नदी और अंडरपास को स्विमिंग पूल बना दे, तो टाउन प्लानिंग की पोल खुल जाती है. सीमेंट रोड बनाने से पहले पुरानी डामर की सड़क की गहरी खुदाई नहीं की गई. ऊपर की परत खुरचकर सीमेंट कंक्रीट चढ़ा दिया गया. नतीजा यह निकला कि घर नीचे रह गए और सड़क ऊंची हो गई. ऐसे में लोगों के मकानों-दुकानों, बस्तियों में पानी घुसेगा ही! न तो स्लोप सही है न पानी निकासी या ड्रेनेज की उचित व्यवस्था है. इसलिए सड़कें लबालब भर जाती हैं. स्कूल के बच्चों को भी फायरब्रिगेड कर्मियों की मदद से बाहर निकालने की नौबत आ गई. विभिन्न विभागों का समायोजन न रहने से बार-बार सड़कें खोदी जाती रहीं. अब जाकर तय हुआ है कि पहले पेयजल, सीवरलाइन और केबल बिछा देंगे तब सीमेंट रोड बनाएंगे ताकि बार-बार खुदाई न करनी पड़े. कितनी ही बस्तियों में गड्ढों के बीच सड़क खोजनी पड़ती है. मेनहोल के सीमेंट वाले ढक्कन इतने कमजोर हैं कि कभी भी टूट जाते हैं. ऐसा है तो लोहे के ढक्कन लगाए जाएं. कहीं भी जलभराव के समय खुला मेनहोल जानलेवा हो सकता है. निर्माण कार्य की क्वालिटी घटिया होती जा रही है. उद्घाटन के समय बढ़िया नजर आने वाला पुल कभी भी टूट सकता है. देहरादून में 16 करोड़ रुपये की लागत से बने पुल में 16 दिन बाद ही बड़ा सा गड्ढा हो गया. पुणे का जंगली महाराज रोड डामर से बना है लेकिन कई दशक बीत जाने पर भी उसमें गड्ढे. नहीं पड़े. यमुना पर बने प्रयागराज में पुल नंबर 30 पर 1865 से लेकर अब तक ट्रेन चलती है. यदि निर्माण कार्य सही मटेरियल तकनीक के साथ ईमानदारी से किया जाए तो वह टिकाऊ रह सकता कनाडा की सड़कें बर्फीले तूफान को और जापान की सड़कें भूकंप को बर्दाश्त कर लेती हैं. हमारे देश में तो एक अजीब सा पुल 90 डिग्री के कोण का बनाया गया था, जहां वाहन को मोड़ना असंभव था. सड़क या पुल जैसे हर निर्माण कार्य का स्वतंत्र ऑडिट होना चाहिए. काली सूची में डाले गए ठेकेदारों को काम नहीं देना चाहिए. दोषपूर्ण निर्माण के लिए जुर्माना लगाया जाए तो काम सही तरीके से होने लगेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

धर्मेंद्र प्रधान का शानदार सत्कार एनडीए सांसदों ने दिखाया दुलार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, केंद्रीय शिक्षामंत्री पद से इस्तीफा देने वाले धर्मेंद्र प्रधान का संसद भवन के मकर द्वार पर बीजेपी नेताओं ने जोरदार स्वागत किया. उन्होंने पूर्व मंत्री को बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र में प्रचलित सम्मान का प्रतीक 'पाग' पहनाकर सम्मानित किया. इससे ऐसा लगा मानो वह कोई रण जीतकर लौटे महान योद्धा हैं.'

हमने कहा, 'प्रधान शब्द का अर्थ ही प्रमुख होता है. ग्राम प्रधान से लेकर प्रधानमंत्री तक के पद हमारे देश में हैं. मोदी स्वयं को प्रधान सेवक कहते हैं. ग्रामीण लोग 'प्र' का उच्चारण नहीं कर सकते इसलिए वह परधानमंत्री कहते हैं. गुजरात में प्रधानमंत्री को 'मोटा प्रधान' कहते हैं. इस पद पर कोई दुबला-पतला व्यक्ति भी बैठ जाए तो उसे गुजरातवासी मोटा प्रधान ही कहेंगे. 56 इंच का सीना रखने वाले मोदी मोटा प्रधान कहलाने के लिए सर्वथा योग्य हैं. उन्होंने देशवासियों से मिलेट या मोटा अनाज खाने की अपील भी की थी. महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री को पंतप्रधान कहते हैं. यदि पीएम किसी तीर्थयात्रा या

धार्मिक समारोह में साधु जैसा परिधान पहन लें तो उन्हें संत प्रधान भी कहा जा सकता है. चाहे पंत हों या संत, उनके भक्तों की देश में कोई कमी नहीं है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम पूर्व शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान की बात कर रहे हैं. आप उनके इस नाम को लेकर हेमापति ही-मैन धर्मेंद्र या विश्व हिंदू परिषद के दिवंगत नेता आचार्य धर्मेंद्र को याद न करें. विषय केंद्रित बात करें.'

हमने कहा, 'धर्मेंद्र प्रधान का स्वागत करना उनके घाव पर मरहम लगाने जैसा है. उन्हें एहसास कराया गया कि मंत्रीपद गया तो कोई बात नहीं, पूरी भाजपा उनके पीछे चट्टान की तरह खड़ी है. पेपर लीक को भूलकर मानो कि सब कुछ बिल्कुल ठीक है. उनके इस्तीफे को महान त्याग और बलिदान माना जाएगा जो उन्होंने स्वयं अपनी मर्जी से देशहित और सरकार हित में दिया है. बीजेपी मानती है कि धर्मेंद्र ने धर्म का काम या धर्माचरण किया. वह नहीं चाहते थे कि छात्रों के आंदोलन में कोई असामाजिक तत्व शामिल हो जाएं जिससे देश की शांति-व्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो जाए, इसलिए उन्होंने इस्तीफा देकर महान त्याग का परिचय दिया. उन्हें धर्मेंद्र की बजाय धर्मराज कहना चाहिए.' पड़ोसी ने कहा, 'इसे लेकर हिंदी में कहावत है- नाखुन कटाकर शहीद कहलाना !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12335

-डॉ. सागर खादीवाला

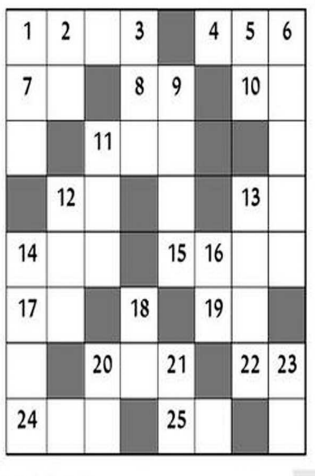

ऊपर से नीचे
1. निद्रा, शय्या, बिस्तर (सं.) 2. कमरा 3. रक्षा करना 5. निशा, रात्रि (सं.) 6. समायोग, संभरण 9. घात, चालाकी 11. वेश्या (सं.) 12. मूर्ख, दुष्ट, नीच, परमा रोग से ग्रस्त (सं.) 13. प्राय: बहुधा, अक्सर 14. बच्चों के खेलने का खिलौना जिसे हिलाने पर ध्वनि निकलती है 16. थोड़ा, अल्प 18. कोलाहल, धूम, प्रसिद्धि 20. शयन करना, स्वर्ण 21. शान, शौकत, ऐश्वर्य, वैभव 23. मेरुदंड

बाएं से दाएं
1. नंदवंशीय अंतिम सम्राट महानंद का प्रधानमंत्री जिसे अपनी ओर करके चाणक्य ने नंदवंश का नाश किया 4. यत्नपूर्वक (सं.) 7. एक देवयोनि 8. नुकसान, हानि 10. मां का भाई 11. गिनने वाला 12. हाथ (सं.) 13. ईश्वर, बकरा, स्वयंभू (सं.) 14. कर्णाभूषण, कर्णफूल 15. विषय वस्तु, लेख 17. मनुष्य, पुरुष जाति का 19. हिंदुओं के आराध्य 20. 48 मात्राओं वाला एक छंद 22. नाड़ी, मानवी 24. नृत्य करना 25.

Solution 12334

बा	द	शा	ह		आ	मु	ख
रू	ह		सी	मा	शु	ल्क	
द	न	द	ना	ना			आ
		र			इ	का	ई
प्रा	थ	मि	क		क	स	ना
ण		या	च	क	ता		
दा		न		स	रा	प	ना
न	टी		सू	म		ता	व

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा. व्यय पर नियंत्रण रखें. शिक्षा और प्रतियोगिता में यात्रा होगी. सफलता के योग है. सामाजिक ख्याति प्राप्त होगी. वर्ष के अन्त में सिरदर्द या अनिद्रा जैसे रोगों से परेशानी होगी. व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यस्तता से दिमागी उलझन रहेगी. चल-अचल संपत्ति के कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा. मित्रों से व्यर्थ वाद विवाद होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यक्तित्व का विकास होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन लाभ होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.स्थान परिवर्तन का योग है. सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं में लाभ होगा.

मेष- आपने कार्यों को समय पर पूरा करने का प्रयास करें, मनोरंजन में समय व्यतीत होगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. घरेलू विवादों की अनदेखी न करें.

वृषभ- पारिवारिक दृष्टि से दिन मध्यम रहने की संभावना है. विरोधी कामकाज बिगाड़ने की चेष्टा करेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी.

मिथुन- मान प्रतिष्ठा में कमी आयेगीं खर्च बढ़ने से पैसों का इंतजाम करना होगा. धार्मिक कार्यो में लगन रहेगी. सम्मान में वृद्धि होगी. संयम रखें.

कर्क- व्यापार व्यवसाय मध्यम रहेगा. नई योजनाओं का श्रीगणेश होगा. अतिथि वृषभमन का योग है. संपत्ति संबंधी विवादों का समाधान होगा.

सिंह- भौतिक सुख साधनों में रूचि बढ़ेगी. विरोधियों से सतर्क रहकर कार्य करें. आय व्यय में संतुलन रहेगा. कार्यो में रूचि रहेगी.

कन्या- व्यापार लाभदायक रहेगा. परिवार में सुख शांति रहेगी. सम्मान मिलेगा. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा. मनोंवांछित सफलता प्राप्त होगी.

तुला- कार्यक्षेत्र विस्तृत होगा. व्यवसायिक बाधायें दूर होंगी. जीवनसाथी का कार्य अच्छा और सहयोगी रहेगा. पारिवारिक कार्यो में रूचि रहेगी.

वृश्चिक- कानूनी मामलों में समय का ध्यान रखें, नौकरी में सफलता मिलेगी. दैनिक कार्य में यश प्राप्त होगा. प्रियजनों से विवाद को टालना हितकर रहेगा.

धनु- सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा, नए संबंध बनेंगे, अनुभवों का लाभ मिलेगा. शुभ समाचार प्राप्त होंगे. मान सम्मान में वृद्धि होगी. मनोबल बना रहेगा.

मकर- पुरूषार्थ का प्रतिफल मिलेगा, धैर्य आपको उन्नति की पराकाष्ठा पर ले जायेगा. वाद विवाद से दूर रहें. आकस्मिक लाभ का योग प्रबल है.

कुम्भ- आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी. विरोधियों से सतर्क रहें, जल्दबाजी में कार्य न करें. अभीष्ट की प्राप्ति होगी. नौकर चाकरों का सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- परिवार में शुभ कार्यो का निर्णय होगा. मानसिक अस्थिरता दूर करें. पुराना कार्य बनने का योग है. शुभ सूचना प्राप्त होगी. प्रापर्टी संबंधी कार्यो से बचना चाहिये.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान चतुर चंचल मिलनसार और परोपकारी होगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. निर्णय लेने में अग्रणी एवं सक्षम होगा. किसी के अधिनस्थ कार्य करना पसंद नहीं करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

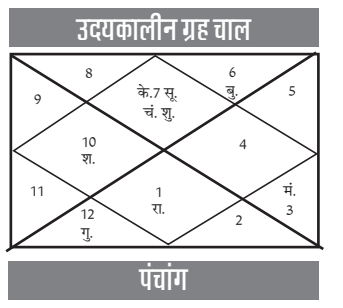

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण द्वितीया भृगुवासरे रात 9/18, धनिष्ठा नक्षत्रे रात 7/26, सौभाग्य योगे रात 12/44, तैतिल करणे सू.उ. 5/24, सू.अ. 6/36, चन्द्रचार मकर प्रात: 6/44 से कुम्भ, पर्व- अशून्यशयन व्रत, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण द्वितीया को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, धातु, मोती, पुखराज, जौ, चना, अलसी, तिल, गुड़, खांड़ रूई, कपास में वृद्धि होगी. वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनिट से 25 मिनिट के बने रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 3723 है.

SUDOKU 7467

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
							3	5
	6						7	
4	8							
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7466

4	2	5	8	6	1	9	7	3
7	3	1	9	4	2	8	5	6
6	9	8	7	3	5	4	2	1
1	6	2	3	8	9	5	4	7
9	4	3	5	1	7	6	8	2
8	5	7	4	2	6	3	1	9
2	1	9	6	5	8	7	3	4
5	7	4	1	9	3	2	6	8
3	8	6	2	7	4	1	9	5